

किसान अपने खेत पर स्वयं का सोयाबीन बीज उत्पादन कैसे करें?

1. बीज उत्पादन के लिए प्रजनक / आधार बीज मान्यता प्राप्त स्रोत से प्राप्त करें।
2. खेत के 1/10 भाग से उत्पादित बीज संपूर्ण खेत में बोवनी हेतु पर्याप्त होगा अतः इसे आरक्षित कर अनुशंसित तकनीकी का प्रयोग करें।
3. यह सुनिश्चित करें कि जिस किस्म का बीज उत्पादन किया जा रहा है वह उसी खेत में पिछले वर्ष में न उगाई गई हो एवं खेत में जल निकास का उचित प्रबंध हो।
4. बोवनी से पहले खेत की गहरी जुताई एवं विपरीत दिशा में बख्खर चलाने के पश्चात् पाटा चलाकर खेत को समतल करें।
5. मानसून के आगमन के पश्चात् 45 से.मी. कतार से कतार की दूरी एवं 5 से.मी. बीज की दूरी रखते हुए अधिकतम 3 से.मी. की गहराई पर उपयुक्त सीड डील से बोवनी करें।
6. न्यूनतम 70 % अंकुरण के आधार पर अनुशंसित 60-80 कि. ग्रा. बीज दर का प्रयोग करें।
7. बोवनी से पहले सोयाबीन के बीज को थाइरम एवं कार्बेन्डाजिम (2:1) 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अथवा मिश्रित उत्पाद कार्बोक्सिन 37.53% + थाइरम 37.5% (विटोवेक्स पावर) 2-3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। इनके स्थान पर बीज उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडी (8-10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज) का भी उपयोग किया जा सकता है। तत्पश्चात् जैविक खाद (ब्रेडीराइजोबियम कल्चर एवं पीएसबी कल्चर 5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से) से उपचारित कर तुरंत बोवनी करे।
8. समुचित पोषण प्रबंधन हेतु अनुशंसित 20:60:20:20 कि.ग्रा./हे. की दर से आवश्यक नत्रजन:स्फुर:पोटाश:गंधक की पूर्ति हेतु बोवनी के समय विभिन्न उर्वरकों का प्रयोग करें।

9. फसल सुरक्षा हेतु विभिन्न जैविक (कीट/बीमारी/खतपतवार आदि) एवं अजैविक तनावों (सुखा/अतिवृष्टि आदि) से होने वाली उत्पादन में संभावित कमी को टालने हेतु समय-समय पर खेत की निगरानी कर उनका प्रबंधन करें। निरीक्षण के दौरान खेत में पाये गये अवांछित कीट एवं रोगग्रस्त पौधे, खरपतवार आदि को नष्ट करें।
10. पत्तियों का आकार, फूलों के रंग, फलियों पर रोएं आदि लक्षणों के आधार पर अवांछित/अलग किस्म के पौधों की पहचान कर उन्हें नष्ट करें।
11. पौधे, फूल एवं दाना भरने की अवस्थाएं मृदा नमी के लिए क्रांतिक अवस्थाएं हैं। अतः इस समय सुखा पड़ने पर सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। इस निदेशालय द्वारा विकसित बीबीएफ सीड डील एवं फर्ब सीड डील द्वारा बोवनी करने पर सुखा एवं अधिक वर्षा से होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है।
12. फलियों का हरा रंग बदलने या पूर्णतया समाप्त होने पर यह मान लें कि फलियां परिपक्व हो चुकी हैं। इस अवस्था में सोयाबीन की कटाई करनी चाहिए। कटी हुई फसल को 2-3 दिन धूप में सुखाकर थ्रेशर से धीमी गति (300-400 आर.पी.एम.) पर गहाई करनी चाहिए एवं इस बात की सावधानी रखें कि गहाई के समय बीज के छिलके को क्षति न हों।
13. गहाई के बाद बीज को धूप में अच्छे से सुखाकर भण्डारण करना चाहिए। भण्डार गृह ठंडा, नमीरहित व हवादार होना चाहिए। यहां यह भी सावधानी रखें कि 4 से अधिक बोरियों को एक के उपर एक न रखें। बीज की बोरियों को उँचाई से नहीं पटकना चाहिए। इससे बीज की अंकुरण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

संकलन एवं संपादन
डॉ. बी.यू. दूपारे एवं
डॉ. एस.डी.बिल्लौरे

तकनीकी मार्गदर्शन
डॉ. एस. एम. हुसैन
प्रकाशक
डॉ. एस.के. श्रीवास्तव, निदेशक

आदिवासी-कृषकों के हित में प्रकाशित (टी.एस.पी.)



विस्तार फोल्डर क्रमांक 3 (2012)

सोयाबीन की उन्नत प्रजातियां एवं बीजोत्पादन



सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

खण्डवा रोड, इन्दौर - 452 001 म.प्र.

दूरभाष : 0731-2476188

वेबसाइट: www.dsriindore.org

फैक्स : 0731-2470520

ई-मेल : dsrdirector@gmail.com

सोयाबीन की उन्नत प्रजातियां एवं बीजोत्पादन

किसी भी फसल का अधिकाधिक उत्पादन लेने में उन्नत किस्म तथा उसके गुणवत्तापूर्ण बीज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विकसित उन्नत किस्मों को विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में कम से कम तीन वर्षों के निरंतर परीक्षण एवं आंकलन में लाभकारी पाये जाने पर ही उन्हें राज्य/क्षेत्र अनुसार विमोचित किया जाता है। इन किस्मों में अधिक उत्पादन क्षमता तथा विशेष गुण होते हैं, जिनसे वह विभिन्न जैविक एवं अजैविक कारकों का विपरीत परिस्थितियों में भी सामना करने में सक्षम होती हैं। भारतीय सोयाबीन की प्रजातियों को उपयुक्त जलवायु अनुसार देश के पांच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है (तालिका 1)। भारत में अभी तक जारी की गई कुल 98 किस्में बीज श्रृंखला में समाहित हैं जिनमें से मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त प्रमुख किस्मों की जानकारी निम्नानुसार है।

कं	किस्म	पकने की अवधि (दिन)	उत्पादन (हैक्टे.)
1.	एनआरसी 7	90-99	25-35
2.	एनआरसी 37	99-105	30-40
3.	जेएस 335	98-102	25-30
4.	जेएस 93-05	90-95	20-25
5.	जेएस 95-60	82-88	18-20
6.	जेएस 97-52	95-100	20-25
7.	एमएयूस 61-2	100-105	20-25
8.	एमएयूस 81	93-97	30-33
9.	इंदिरा सोया 9	100-105	22-23
10.	एमएयूस 47	85-90	25-30
11.	जेएस 71-05	90-95	20-24



तालिका 1: राज्य / क्षेत्रवार सोयाबीन की अनुशंसित किस्में

क्षेत्र/राज्य	उपयुक्त किस्में
उत्तर पर्वतीय क्षेत्र हिमाचल प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र	वी.एल.एस. 21, वी.एल.एस. 47, वी.एल.एस. 59, वी.एल.एस. 63, पालम सोया, हरित सोया, ब्रेग आदि।
उत्तर मैदानी क्षेत्र पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के उत्तर पूर्वी मैदान, उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्र व पश्चिमी बिहार	पी.एस. 1347, पी.एस. 1225, पी.एस. 1241, एस.एल 525, एस.एल. 688, पूसा 9712, पूसा 9814, ब्रेग आदि।
मध्य क्षेत्र मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश का बुन्देलखण्ड भाग, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के उत्तर पश्चिमी भाग व उड़ीसा	जे.एस. 335, जे.एस. 93-05, जे.एस. 95-60, एन.आर.सी. 7, एन.आर.सी. 12, एन.आर.सी. 37, इंदिरा सोया 9, जे. एस. 97-52, एम.ए.यू.एस. 47, एम.ए.यू.एस. 61-2, एम.ए.यू.एस. 81, ब्रेग आदि।
दक्षिणी क्षेत्र कर्नाटक, तमिलनाडू, आन्ध्र प्रदेश, केरल व महाराष्ट्र के दक्षिणी भाग	प्रताप सोया 2, टी.ए.एम.एस. 98-21, टी.ए.एम.एस. 38, फूले कल्याणी, एम.ए.यू.एस. 61, एम.ए.सी.एस. 450, एल.एस.बी 1, पी.एस. 1029, ब्रेग, एन.आर.सी. 77 आदि।
उत्तर पूर्वी क्षेत्र आसाम, पश्चिमी बंगाल, बिहार छत्तीसगढ़, मेघालय मणिपुर व नागालैण्ड	प्रताप सोया 1, प्रताप सोया 2, जे.एस. 97-52, एम.ए.यू.एस. 71, इंदिरा सोया 9, जे.एस. 80-21, ब्रेग आदि।